6

बच्चों के पालन पोषण के लिए परमेश्वर की मुख्य योजना

वचन पाठ-व्यवस्थाविवरण 6:4-9

आज माता-पिता बनना भी कितना चुनौती भरा है ! परमेश्वर की सहायता के बिना यह और भी कठिन हो सकता है। माता-पिता के लिए यह आवश्यक है कि अपने बच्चों को चेले बनाने से पहले परमेश्वर के सहभागी बनें।[1]

कई साल पहले माता-पिता के एक और समूह को एक बहुत बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ा और यह चुनौती अपने बच्चों का मूर्तिपूजक समाज में पालन-पोषण करने की थी, जिसमें उन्हें धकेला जाना था। इस्राएली कनान देश की सीमा पर ही थे। इसे ''प्रतिज्ञा किया हुआ देश'' कहा जाता था, परन्तु देश के कुछ पहलू केवल प्रतिज्ञा ही थे। यदि आप अपने परिवार को कहीं घुमाने की योजना बना रहे हों तो कनान देश आपकी पहली पसन्द नहीं होगा। इसके आस-पास के देश बिगड़े हुए, भ्रष्ट और परमेश्वर को न मानने वाले थे।

मूसा के भीड़ की ओर देखते ही सारा वातावरण गुस्से से भर गया होगा। एक पीढ़ी तो पहले ही जंगल में भटक कर खो चुकी थी और यही बात दोबारा दोहराई जा सकती थी। मूसा ने लोगों को चेताया कि उन्हें क्या पता होना चाहिए, किस पर विश्वास करना चाहिए और उनके लिए क्या करना आवश्यक है। उसकी समीक्षा व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में मिलती है।[2] उसके संदेश को इन शब्दों में संक्षिप्त किया जा सकता है, ''जिस देश में आप रहते हैं, उस के लोगों की जीवनशैली को अपने जीवनों पर लागू न करें।''

व्यवस्थाविवरण 6:4-9 में दी गई गई आज्ञा का आधार यही है:

> हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है; तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना। और ये आज्ञाएं, जो मैं आज तुझ को सुनाता हूं, वे तेरे मन में बनी रहें; और तू इन्हें अपने बाल-बच्चों को समझाकर सिखाया करना, और घर में बैठे, मार्ग पर

> चलते, लेटते, उठते, इनकी चर्चा किया करना। और इन्हें अपने हाथ पर चिह्नानी करके बान्धना, और ये तेरी आंखों के बीच टीके का काम दें। और इन्हें अपने-अपने घर की चौखट की बाजुओं और अपने फाटकों पर लिखना।

यह यहूदी लोगों के धर्मशास्त्र का एक मुख्य भाग बन गया। प्रारम्भिक आयत को *शेमा* कहा गया, क्योंकि आयत 4 का पहला शब्द *शेमा* है, जिसका अर्थ है, ''सुनना।'' समय के साथ-साथ शेमा 9 आयत तक बढ़ गया और कई बार इसमें कुछ और हवाले भी जुड़ जाते हैं। यह आयत यहूदियों के लिए आराधना की बुलाहट, युद्ध की पुकार और मरते समय की प्रार्थना बन गया। एकेश्वरवाद और एक परमेश्वर के साथ सम्बन्ध का यह उत्कृष्ट कथन यहूदी धर्म के लिए प्रमुख बन गया। यही धारणाएं मसीहियत के लिए विशेष हैं (मत्ती 22:36-38)।

इस भाग को पढ़ते हुए हमें इस बात को नहीं भूलना चाहिए कि यह माता-पिता के लिए (और दादा-दादी के लिए; आयत 2) एक बहुत बड़ी चुनौती थी (आयत है)-न कि पूरे समाज या धार्मिक अगुओं और शिक्षकों के लिए है। *परिवार* भावी पीढ़ियों को सिखाने के लिए परमेश्वर का प्रमुख प्रतिनिधि है।

इस शृंखला में हम शादी और घर के लिए परमेश्वर की योजना पर ज़ोर दे रहे हैं। यह पाठ और अगला पाठ बच्चों के पालन-पोषण की चुनौती पर ही रहेगा। व्यवस्थाविवरण 6:4-9 के ध्यानपूर्वक अध्ययन के साथ हम एक ऐसा आधार बनाना चाहते हैं, जिसे हम ''बच्चों के पालन-पोषण के लिए परमेश्वर की मुख्य योजना''[3] नाम दे रहे हैं।

विश्वास करें (6:4-6)

पालण-पोषण करने के लिए परमेश्वर की योजना आत्मिक महत्व से आरम्भ होती है न कि शारीरिक महत्व से: ''तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना'' (आयत 5)। इसके अलावा पालन-पोषण की परमेश्वर की योजना का आरम्भ माता-पिता से होता है कि *उन्हें* कैसे होना चाहिए: ''और ये आज्ञाएं, जो मैं आज तुझ को सुनाता हूं, वे *तेरे* मन में बनी रहें'' (आयत 6)।

सफलतापूर्वक पालन-पोषण करने के लिए हमें वैसी विशेष दक्षता पाना आवश्यक नहीं है, जैसी सफल व्यक्ति बनने के लिए होती है। पालन-पोषण करने की कक्षा पर एक खोज करते हुए मैंने कुछ विवरण इस प्रकार लिखे, ''अच्छा पालन-पोषण अच्छी जीवन शैली से होता है''; ''हमारे *द्वारा* तब तक ऐसा कुछ नहीं हो सकता, जब तक वह हमारे *साथ* न हो।''; ''कपटी लोग कभी भी अच्छे माता-पिता नहीं बन सकते।'' यदि हम सफल माता-पिता बनना चाहते हैं तो हमें ''विश्वसनीय,'' यानी ईमानदार बनना आवश्यक है। अपने बच्चों को ठीक रीति से प्रभावित करने के लिए, पहले हमें वैसा बनना होगा, जैसा हमें होना चाहिए।

हमारा, वचन-पाठ माता-पिता की दो ज़रूरतों पर ज़ोर देता है। *पहला* हमें अपनी पूरी जान से (आयत 5), पूरे दिल से (अपनी भावनाओं और मन), अपने प्राण से (अपने जीवनों से) अपनी इच्छा (अपनी शक्ति और कार्यों) से परमेश्वर से प्रेम करना आवश्यक है। *दूसरा,* अपने बच्चों को यह सिखाना कि परमेश्वर का वचन हमारे मन ''में'' और मन ''पर'' होना चाहिए (आयत 6)। KJV अनुवाद है, ''और ये बातें जिनकी मैं आज तुझे आज्ञा देता हूं, तेरे मन में रहें'' (आयत 6)। परमेश्वर के वचन को अपने मनों ''में'' रखने के लिए हमें इसे पढ़ना, सीखना, इस पर मनन करना, इसे याद करना और इसे अपने जीवन का भाग बनाना आवश्यक है। NASB का अनुवाद है, ''ये बातें तुम्हारे मनों *पर* हों।'' मन ''पर'' कुछ होने का अर्थ है कि यह हमारे लिए अति महत्वपूर्ण है। वचन बोल कर उतना ही सिखाया जा सकता है, जितना अपने व्यवहार से।

इसे सिखाएं (6:7)

आयत 7 में माता-पिता के लिए चुनौती जारी रहती है: ''और तू इन्हें [परमेश्वर की आज्ञाओं को] अपने बाल-बच्चों को समझा कर सिखाया करना, और घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते, उठते, इनकी चर्चा किया करना।''

हमारे बच्चों को परमेश्वर और उसके मार्ग की जानकारी अपने आप नहीं होगी; उन्हें बताना आवश्यक है। बच्चों को आस-पास के संसार की बहुत सी सच्चाइयों को सिखाना चाहिए कि आग का काम जलाना है, कांच टूट जाता है और भूमि से उखड़ने पर फूल सूख जाएगा। उन्हें परमेश्वर की सच्चाइयां भी बतानी आवश्यक है।

हमारा वचन-पाठ हमें अपने बच्चों को ''यत्न से'' सिखाने की आज्ञा देता है। यदि इस आयत का अनुवाद किया जाए तो यह ऐसे पढ़ा जाएगा, ''तू *उसे* अपने बच्चों में *तेज़ करना*।'' परमेश्वर के वचन को उनके मनों में तेज़ करना यानी उनके मनों में इसकी सच्चाइयां डालना आवश्यक है (देखें इब्रानियों 4:12; प्रेरितों 2:37)। दोचित्ते मन से की गई कोशिश से ऐसा नहीं हो सकता। यह संसार तो पूरी रीति से हमारे बच्चों के मनों और दिलों पर राज करने की ताक में है। हमें अपनी शिक्षा में और भी आक्रामक होने की आवश्यकता है।

माता-पिता होने के कारण हमें पवित्र शास्त्र के प्रति बच्चों का ज्ञान बढ़ाने के लिए हर ढंग का लाभ उठाना चाहिए। हमें इस बात का ध्यान रखना होगा कि बच्चे हर बाइबल क्लास में जाएं, हर प्रार्थना सभा में जाएं और मसीही जवानों के हर कार्य में भाग लें।[4] बेशक, ऐसे अवसर उस शिक्षा के जो हमें स्वयं बच्चों को देनी चाहिए, का अतिरिक्त भाग ही हैं। एक ढंग, जिससे हम यह सब सिखा सकते हैं, वह है प्रतिदिन की पारिवारिक प्रार्थना। कई लोगों ने तो पारिवारिक आनन्द और मेल-जोल के लिए प्रत्येक सप्ताह विशेष पारिवारिक रात्रि की योजना भी बनाई होती है।[5]

परन्तु हमारे वचन-पाठ में इस बात पर ज़ोर नहीं है कि किसी ठहराए हुए समय पर ही सिखाना आवश्यक है, बल्कि इसमें हर समय सिखाने पर ज़ोर है। आयत 7 कहती है,

''और तू इन्हें अपने बाल-बच्चों को समझा कर सिखाया करना, और घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते, उठते, इनकी चर्चा किया करना।'' ''घर में बैठने'' में खाने का समय भी शामिल होगा। (भोजन करने का समय बहुत ही बढ़िया समय है, क्योंकि इसमें सुनने वाले बंधे होते हैं: बच्चों को इतनी भूख लगी होती है कि वे उठकर जा ही नहीं सकते!)[6]

वचन-पाठ ''मार्ग पर चलते हुए'' दी जाने वाली शिक्षा के विषय में भी बताता है। उस ज़माने में परिवार आमतौर पर इकट्ठे लम्बी दूरी पैदल ही तय किया करते थे। आज भी कई परिवार इकट्ठे लम्बी यात्रा पर जाते हैं। सिखाने के लिए वह बेहतरीन समय होता है। पैदल जा रहे हों या कार में, या किसी और वाहन में यह समय थका देने वाला भी हो सकता है और इसमें अपने विश्वास को दूसरों के साथ बांटा भी जा सकता है।[7]

इस सिखाने में ''मार्ग पर चलते'' में एक और विचार जोड़ना आवश्यक है कि अपने व्यवहार से अपना विश्वास दिखाते समय अर्थात किसी बीमार के लिए भोजन लेकर जाने, अस्पताल में किसी का पता लेने, किसी शोकित परिवार में जाने के समय हमें अपने बच्चों को भी साथ लेकर जाना चाहिए।

''लेटते'' सोने के समय को कहा गया होगा! अधिकतर बच्चों के लिए सोने का समय विशेष समय होता है। सिखाने का वाद-विवाद करने का यह अच्छा समय होता है। यह शान्त समय हो सकता है।[8]

अन्त में माता-पिता को ''उठते'' अर्थात सुबह के समय और नाश्ते के समय बच्चों को सिखाने के लिए चुनौती दी गई है। बच्चों को यह सिखाने का कि दिन की शुरुआत कैसे करनी चाहिए, यह बहुत ही बढ़िया समय है।

व्यवस्थाविवरण 6:4-9 का नियम ही है कि माता-पिता किसी भी समय और हर समय सिखाते रहें। हमें हर पल का इस्तेमाल अपने बच्चों को अपना प्रेम और विश्वास दिखाने में खर्च करना चाहिए। हमें चाहिए कि अपने जीवन को ''धर्म,'' ''काम,'' ''खेल,'' आदि जैसे भागों में न बांटें, बल्कि हमारा सिखाना हमारे प्रतिदिन के जीवन में कपड़ों की तरह बुना हुआ होना चाहिए। किसी भी क्षण, किसी भी अवसर पर, कहीं भी हमें अपने विचारों को बताने का अवसर मिल सकता है; धनक, निर्णय लेने का समय, समुदाय में किसी के जन्म या मुत्यु का समय। जॉन एम. ड्रेशर ने कहा कि यदि उसे फिर से अपना परिवार आरम्भ करने का अवसर मिले तो वह इसी कोशिश में रहेगा कि अधिक निकटता से परमेश्वर के विषय में अपने बच्चों को बता सके:

> मैं अपने बच्चों के साथ हर रोज आधा घंटा ढलता सूरज देखते हुए यह अवलोकन करूंगा कि परमेश्वर कैसे अपने रंगों को चुन कर सुन्दर तस्वीर बनाता है। ... मैं शाम को भी कुछ समय निकालकर उन पत्तों को निहारूंगा, जो ऐसे लगते हैं जैसे उन्हें अभी-अभी किसी ने बर्फीले पानी से डुबो कर निकाला हो। मैं रात को भी अपने बच्चों के साथ उन तारों को निहारूंगा, जिन्होंने परमेश्वर के सारे आकाश में उजियाला भर दिया है और देखते ही देखते कैसे दुनिया को अन्धेरे में

दोबारा रचता है और सारी सृष्टि को अगले नये दिन के लिए फिर से तैयार करता है। ...

फिर हम वनस्पति से भरी हुई चट्टानों को देखेंगे और अपने पिता द्वारा फिर से बनाए गए पक्षियों की चहचाहट सुनेंगे ... मैं कुछ और समय की खोज में रहूंगा, जिसमें मैं नदी के किनारे टहलते हुए, पिता द्वारा बनाए गए फूल उठाऊंगा और छोटी-छोटी चीजों में उस बड़े परमेश्वर को और उसकी इस दृष्टि की अद्‌भुत चीज़ों को देखूंगा। ... मैं गर्मियों में भी कुछ समय बाहर खुले में रात को अपने परिवार के साथ परमेश्वर के आकाश के नीचे लेट कर तारों के विषय में बात करूंगा, प्रकृति की आवाज़, पेड़ों में हवा की सरसराहट और अदृश्य जीव-जन्तुओं की छोटी-छोटी आवाज़ें भी सुनूंगा। मैं अपने बच्चे को शैल्फ और ड्राअर बनवा कर दूंगा, जिसके ऊपर वह अपनी टॉफियां और मनपसन्द चीज़ें रख सकें।[9]

अपने बच्चों के साथ होने के समय हमें ''सीखने के अवसर'' की बात की खोज में रहना चाहिए। इनमें से एक है, ''सीखने का नियम'' ही ''तैयारी का नियम'' है। यह नियम सीधे शब्दों में बताया गया है कि जब कोई बच्चा सीखने को तैयार हो, तभी वह ज्यादा अच्छी तरह सीखता है न कि जब हम सिखाने को तैयार हों। ब्रूस नैरेमोर ने ऐसे ही ''सिखाने वाले पल'' के बारे में लिखा है:

कुछ साल पहले मैं और मेरा बेटा बगीचे में काम कर रहे थे।

''पिता जी क्या जंगली बूटी परमेश्वर ने बनाई है?'' डिकी ने परेशान होते हुए पूछा।

मैंने जल्दी से जवाब देने की कोशिश की, ताकि मैं जल्दी अपने काम में लग जाऊं। तभी मुझे इस बात का अहसास हुआ कि यही तो वह समय है, जिसमें मैं उसे आत्मिक बातें सिखा सकता हूं। मैंने खुरपी को एक ओर रखते हुए कहा, ''डिकी तुम आदम और हव्वा के बारे में जानते हो। वह इस पृथ्वी पर रहने वाले सबसे पहले लोग थे। परमेश्वर ने उन्हें एक सुन्दर वाटिका में रखा, जिसमें जंगली बूटी नहीं थी। फिर एक दिन शैतान उनके पास आया, जो सांप की तरह दिख रहा था। आदम और हव्वा को उसने परमेश्वर की आज्ञा तोड़ने को कहा यानी उन्हें वह फल खाने के लिए कहा, जो परमेश्वर ने खाने से मना किया था। फिर पता क्या हुआ? उन्होंने वह फल खा लिया। तब संसार में कठिनाइयों की शुरुआत हुई। आदम और हव्वा द्वारा परमेश्वर की आज्ञा तोड़ने के लिए जंगली बूटी उगने लगी और उन्हें वह सुन्दर बाग छोड़कर बाहर जाकर मेहनत करनी पड़ी।''

रूआंसा मुंह बनाकर डिकी ने जवाब दिया, ''क्या यह बुरी बात नहीं है?''[10]

हम अपने बच्चों की रुचि को बढ़ावा देने की कोशिश तो कर सकते हैं पर उन्हें यह नहीं बता सकते कि ''सिखाने वाले क्षण'' वे होंगे जब हमारे बच्चे सवाल पूछें, जब वे सीखने को तैयार और लालायित हों। यह एक सबसे बड़ा कारण है कि माता-पिता को तैयार

रहना आवश्यक है।

फिर यह भी आवश्यक है कि बच्चों को सिखाना जल्द से जल्द शुरू कर दें। वैज्ञानिक पशुओं और पक्षियों में पाई जाने वाली एक स्वाभाविक क्रिया के बारे में बताते हैं। जन्म के थोड़ी देर बाद, अधिकतर पक्षियों या पशुओं के बच्चे उससे अधिक जुड़ते (या ''प्रभावित होते'') हैं, जिसे सबसे पहले अपने आस-पास देखते हैं। आमतौर पर माताएं ही बच्चों के निकट होती हैं, पर यह मनुष्य या रस्सी पर टंगी हुई कोई चीज़ जैसा कुछ भी हो सकता है। यह ''प्रभाव'' जन्म के कुछ ही मिनटों के भीतर पड़ता है;[11] इसके बाद यह अवसर सदा के लिए जाता रहता है। ठीक इसी तरह यदि हम अपने बच्चों को जल्दी से जल्दी नहीं सिखाएंगे, तो उनके रचनात्मक वर्षों में तो वह सदा के लिए खो सकता है।

हमारे बच्चे उन बातों में से कुछ ही याद रखेंगे, जो हमने उन्हें सिखाई हैं, लेकिन जो उन्हें अधिक याद रहेगा वह है हमारा *व्यवहार*। हम अपने आप को सफल मान सकते हैं, यदि हम पिछले पाठ में दिए गए विचार को प्रभावित कर दें: ''हम जो करते हैं, वह इसलिए करते हैं कि हम क्या हैं, और जो हम हैं वह इसलिए हैं कि हमारा विश्वास यह है।''

इसे जीएं (6:8, 9)

इस्राएलियों को ईश्वरीय ज्ञान देने के बाद मूसा ने कहा, ''और इन्हें अपने हाथ पर चिह्नानी करके बांधना, और ये तेरी आंखों के बीच टीके का काम दें। और इन्हें अपने-अपने घर की चौखट की बाजुओं और अपने फाटकों पर लिखना'' (आयतें 8, 9)।

समय बीतने के साथ यहूदियों ने छोटी-छोटी डिब्बियां बना लीं, जिन्हें ''तावीज़''[12] कहा जाता था। इनका इस्तेमाल विशेष अवसरों पर आमतौर पर एक प्रकार के शुभचिंतक के रूप में होता था। वे एक डिब्बी हाथ पर रखते और उस पर डोरी बांध देते थे, ताकि बाजू के मुड़ने पर वह दिल के बिल्कुल निकट हो। वे एक डिब्बी माथे पर भी लगाते थे। इन डिब्बियों को ऐसे बांधा जाता कि उनसे इब्रानी अक्षर बन जाते थे। तब वे उन डिब्बियों को अपने घरों की चौखट पर बांध देते। रूढ़िवादी यहूदी अभी तक ऐसा ही करते हैं। उस डिब्बी के अन्दर एक कागज़ डाला जाता है, जिस पर व्यवस्थाविवरण 6 अध्याय की (बातों के अलावा कुछ और बातें) लिखी होती हैं, जो इब्रानी में लिखी होती हैं। भक्त यहूदी उस डिब्बी (जिसे मैज़ुज़ाह कहा जाता है) उस चौखट को लांघते समय हर बार हाथ से छूता है; वह अपनी उंगलियों को चूमता और भजन संहिता 121:8 इब्रानी भाषा में बोलता है ''यहोवा तेरे आने-जाने में तेरी रक्षा अब से लेकर सदा तक करता रहेगा।''

क्या यही है, जो परमेश्वर के मन में है ? नि:संदेह कागज़ों के टुकड़ों पर आयतें लिख कर उन्हें अपने पास रखने में या ऐसे स्मरण पत्र अपने घर में रखने में कोई बुराई नहीं है। मैं ऐसे पुरुषों को जानता हूं, जो अपने साथ आयतें लिखे 3''× 5'' आकार के कार्ड रखते हैं, जो उन्हें लगता है कि दिन भर उनकी सहायता करेंगे। मैं ऐसी स्त्रियों को भी जानता हूं, जो अपने रसोई घर की खिड़की की सिल के ऊपर या फ्रिज के दरवाज़े पर बाइबल की कोई आयत या ''बाइबल में से दिन का प्रमुख विचार'' चिपका कर रखती हैं। परन्तु मुझे

व्यवस्थाविवरण 6:8, 9 में परमेश्वर के इस्राएलियों को छोटी-छोटी डिब्बियां बना कर घरों में हर जगह चिपका देने के आदेश देने की बात पर संदेह है। यीशु ने बाद में मत्ती 23:5 में ऐसे शब्दवाद का उपहास किया, ''वे [फरीसी] अपने सब काम लोगों को दिखाने के लिए करते हैं: वे अपने तावीजों को चौड़े करते, और अपने वस्त्रों की कोरें बढ़ाते हैं।'' साफ है कि फरीसी शेखी मार रहे थे कि ''हमारी डिब्बियां तुम्हारी डिब्बियों से बड़ी हैं और हमारे चमड़े के पटुके तुम्हारे पटुकों से अधिक चौड़े हैं, जिसका अर्थ यह हुआ कि हम तुमसे अधिक विश्वासी हैं!''

परन्तु आयत 8 और 9 में क्या परमेश्वर यह नहीं कर रहा था कि जिस पवित्र सच्चाई की हम बात कर रहे हैं, वह हमारे जीवन का एक भाग बन जानी चाहिए? हमें उन्हें, अपने हाथों पर बांधना चाहिए ताकि यह हाथ जब भी काम करने के लिए उठें तो परमेश्वर के कहे अनुसार करें। हमें उन्हें अपने ''माथे पर बांधना'' चाहिए, ताकि जब भी हम कोई विचार करें तो वही विचार करें, जो परमेश्वर की इच्छा है। हम उन्हें अपने घर की चौखट पर बांधें ताकि परमेश्वर के नियमों से हमारा घर भर जाए!

बच्चों के पालन पोषण की परमेश्वर की योजना माता-पिता के साथ ही खत्म होती है। यह ''काटने वाले सिरे को शक्ति देने वाले [माता-पिता की शिक्षा] कुल्हाड़ी के भार'' का उदाहरण है।[13] ब्रूस नैरामोर ने अपने जैसे माता-पिता को बताया, ''किसी भी ढंग को बच्चे हमारे व्यवहार से अधिक सीखते हैं।''[14] चार्ल्स स्विंडॉल ने कुछ इस तरह से बताया है, ''माता-पिता की उंगलियों के निशान उनके बच्चों के जीवन में दिखाई देते रहते हैं।''[15] जेम्स डॉबसन ने इस कहावत का उदाहरण दिया है, ''बच्चा जिन पद चिह्नों का अनुसरण करता है, अधिकतर वे वही होते हैं, जिन्हें माता-पिता को लगता है कि उन्होंने ढांप लिया है।''[16]

आपने पुरानी कहावत सुनी ही होगी, ''बन्दर नकल अवश्य करता है।'' डॉ. लोगान राइट ने यह कहते हुए कि यह बन्दरों और बच्चों दोनों पर लागू होता है, इसे ''बन्दरों का नियम'' नाम दिया है:

> ... एक बन्दर को डिब्बे खोलकर उसमें से किशमिश निकालना सिखाया गया था। कुछ बन्दरों ने यह प्रर्दशन देखा और उन्हें भी अवसर दिया गया कि वे ऐसा ही करें। अधिकतर मामलों में तो बन्दरों ने फटाफट डिब्बा खोला और किशमिश निकाल ली, जबकि कुछ बन्दर, जिनको यह प्रदर्शन देखने का अवसर नहीं मिला था वे जल्दी से नहीं खोल पाए। बच्चों पर किए गए अध्ययन में भी यही परिणाम मिला।
> ...
>
> एक अध्ययन में बच्चों को खिलौने दिए गए, जबकि वयस्कों को एक बड़ी बोबो डॉल दी गई। जब इन बच्चों को इस गुड़िया से खेलने का अवसर मिला तो वे इसके साथ खेले ही नहीं, बल्कि उन्होंने इसके साथ वह सब किया जो वयस्कों ने किया था। वे उस पर बैठ गए, उसे लातें मारीं, उसे हवा में उछाला और ऐसा

करते हुए उन्होंने वैसे ही शब्दों का इस्तेमाल किया, जैसे शब्दों का इस्तेमाल वयस्कों ने किया था।[17]

माता-पिता होने के नाते हम बच्चों को यही सिखाते हैं। हमें अहसास हो या न कि जो हम करते हैं, जो हम कहते हैं और जो हम हैं, इन सबसे हम सिखा रहे होते हैं। यदि हम से अचानक किसी का नुकसान हो जाए और हम उस नुकसान की ज़िम्मेदारी लिए बिना चले जाएं तो हम सुनहरे नियम (मत्ती 7:12)[18] की शिक्षा दे रहे होते हैं। यदि हम शेखी मारें कि कैसे हमने इन्कम टैक्स की चोरी की या हमने किसी बिजनेस डील का लाभ कैसे उठाया तो हम ईमानदारी पर सबक दे रहे होते हैं (2 कुरिन्थियों 8:21)। यदि हम आराधना में नहीं जाते या दिल से नहीं जाते हैं तो हम कलीसिया में उपस्थिति पर शिक्षा दे रहे हैं (इब्रानियों 10:25)। यदि हम नियमों की अवहेलना करें, जब हमें पता हो कि हमें कोई नहीं देख रहा तो हम बता रहे हैं कि अच्छे नागरिक कैसे बनना है (रोमियों 13:1)।

हमारे बच्चे जीवन की कुछ सबसे मूल्यवान शिक्षाएं हमसे नमूना लेकर ही सीखते हैं: झगड़ों को कैसे निपटाना है, निराशा और दबाव का सामना कैसे करना है, क्रोध और घबराहट पर कैसे काबू पाना है, दवाओं का सहारा लिए बिना जीवन की समस्याओं से कैसे लड़ना है और अपनी भावनाओं को कैसे व्यक्त करना है।

आप को मालूम ही होगा कि ''बच्चे वही सीखते हैं, जो वे जीते हैं,'' लेकिन इसे दोहराना सही रहेगा:

आलोचना के माहौल में रहने वाला बच्चा दोष लगाना सीखता है।
लड़ाई-झगड़े के माहौल में रहने वाला बच्चा झगड़ना सीखता है।
भय के माहौल में रहने वाला बच्चा आशंकित होना सीखता है।
तरस के माहौल में रहने वाला बच्चा अपने लिए खेदित होना सीखता है।
ईर्ष्या के माहौल में रहने वाला बच्चा दोषी महसूस करना सीखता है।
प्रोत्साहन के माहौल में रहने वाला बच्चा आत्मविश्वासी होना सीखता है।
सहनशीलता के माहौल में रहने वाला बच्चा सहनशील होना सीखता है।
प्रशंसा के माहौल में रहने वाला बच्चा प्रशंसनीय होना सीखता है।
स्वीकृति के माहौल में रहने वाला बच्चा प्रेम करना सीखता है।
समर्थन के माहौल में रहने वाला बच्चा अपने आप को पसन्द करना सीखता है।
पहचान के माहौल में रहने वाला बच्चा सीखता है कि लक्ष्य होना अच्छा है।
निष्कपटता के माहौल में रहने वाला बच्चा सीखता है कि न्याय क्या है।
ईमानदारी के माहौल में रहने वाला बच्चा सीखता है कि सच्चाई क्या है।
सुरक्षा के माहौल में रहने वाला बच्चा अपने आप में और अपने आस-पास के लोगों में विश्वास करना सीखता है।
मित्रतापूर्वक माहौल में रहने वाला बच्चा सीखता है कि संसार रहने के लिए अच्छी जगह है।[19]

बच्चे हमारे जीवनों से प्रभावित तो होते ही हैं, उन पर भलाई या बुराई के लिए वह प्रभाव भी अमिट रहता है। निर्गमन 20:4-6 में एक गम्भीर सच्चाई मिलती है: इस पर ज़ोर देने के बाद कि हम न तो कोई मूर्ति बनाएं, न उसकी पूजा करें और न उसकी सेवा करें, परमेश्वर ने कहा है कि ''जो मुझ से बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूं'' (आयत 5)। परमेश्वर ने क्यों कहा कि ''पोतों और परपोतों'' को अपने पितरों का दण्ड भुगतना पड़ेगा? क्योंकि माता-पिता का प्रभाव इतनी पीढ़ियों तक रहता है! असंख्य खोजों से पता चला है कि ऐसा ही होता है, परन्तु समाजशास्त्रियों द्वारा इन तथ्यों का ''पता लगाने'' से बहुत पहले पवित्र शास्त्र ने यह सब बता दिया था। एक उदाहरण है: कई अवसरों पर अपनी जान बचाने के लिए अब्राहम ने झूठ बोला (उत्पत्ति 12:10-13; 20:1-5)। बाद में उसके बेटे इसहाक ने भी लगभग वही झूठ बोला (उत्पत्ति 26:6-11)। अब्राहम के पोतों (तीसरी पीढ़ी) में, हम याकूब को ''धोखेबाज'' या ''छलिया'' के रूप में जानते हैं (उत्पत्ति 27:1-19)। याकूब के बूढ़ा होने पर अनुमान लगाएं कि उसकी संतान (चौथी पीढ़ी) ने क्या किया? उन्होंने अपने पिता से झूठ बोला और उसे धोखा दिया (उत्पत्ति 37)![20]

सारांश

व्यवस्थाविवरण 6:4-9 सिखाता है कि यदि हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे परमेश्वर के मार्ग में चलें तो हमारे लिए इस पर विश्वास करना, इसे सिखाना और इसमें जीना आवश्यक है। हमने माता-पिता के लिए इससे मेल खाते जीवन अर्थात निष्कपट प्रमाणिकता मसीह जीवन होने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया है। किसी ने कहा है कि ''माता-पिता होने के उदाहरण का **तेल** माता-पिता के निर्देश के अधिकतर मतभेद को मिटा देता है।''

मैं ''टेढ़े और हठीले लोगों के बीच'' अपने बच्चों को ''ज्योति'' बनने की शिक्षा देने से बड़ी चुनौती की कल्पना नहीं कर सकता (फिलिप्पियों 2:15)। परमेश्वर हम माता-पिता के साथ हो![21]

टिप्पणियां

[1]देखें फिलिप्पियों 4:13. [2]''व्यवस्थाविवरण'' का मूल अर्थ ''दूसरी व्यवस्था'' है, परन्तु यह ''व्यवस्था के दूसरी बार *दिए जाने*'' अर्थात व्यवस्था के दोहराए जाने का संकेत देता है। [3]क्लास में बच्चों के पालन-पोषण पर सिखाते हुए, पृष्ठ भूमि के लिए मेरा अध्ययन पुराने नियम से होता है, जिसमें व्यवस्थाविवरण 6 और नीतिवचन 22 अध्याय में से लिया जाता है। फिर मैं इफिसियों 6 और कुलुस्सियों 3 अध्याय जैसे नये नियम के वचनों में जाता हूं। इस पुस्तक में हमारे पास केवल दो पृष्ठभूमि पाठों की जगह है। [4]आप उपलब्ध लाभदायक गतिविधियों जैसे बाइबल कैंप, मसीही स्कूल और ऐसे और नाम दे सकते हैं। [5]जेम्स डाब्सन ने सुझाव दिया कि

ऐसी रात पर अच्छा अभ्यास परिवार के मूल्यों को लिखना और बच्चों से उन्हें याद करने के लिए कहना है। [6]जहां आप रहते हैं, यदि वहां उपयुक्त हो तो आप ''समय के एक आंख वाले चोर'' अर्थात टेलीविज़न सैट के बारे में चेतावनी शामिल कर सकते हैं। टीवी के सामने भोजन करना संवाद और सिखाने के किसी भी अवसर का नाश कर सकता है। [7]मेरे परिवार के लिए, सुसमाचार के गीत गाना पसन्दीदा समय होता था। [8]मेरा दिमाग मेरी सबसे छोटी बहन के मेरे साथ लम्बी-लम्बी बातें करने की ओर जाता है, जब मैं उसे बिस्तर पर लेटाता था। शायद इसमें यह बात रही हो कि वह सोने को तैयार नहीं होती थी, परन्तु यह एक-दूसरे से बात करने का विशेष समय भी होता था। [9]*हैप्पीनेस इन द होम* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1985), 35 से उद्धृत। परमेश्वर की बात आरम्भ करने के लिए प्रकृति सबसे बढ़िया जगह है (भजन संहिता 19:1, 2; नीतिवचन 6:6; 30:18, 19, 26-28; मत्ती 6:19, 20, 26, 28, 30; 7:6, 16-20; 13:1-9, 24-30; लूका 15:3-7)। बच्चों का पूछना स्वाभाविक है कि ''वह किसने बनाया?'' [10]ब्रूस नैरमोर, *पेरेंटिंग विद लव एण्ड लिमिट्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1979), 64.

[11]वैज्ञानिक लोग ''प्रभावित होने'' के नियम से इतना प्रभावित हैं कि बच्चों को जन्म दिलाने वाले अधिकतर डॉक्टर नवजात शिशुओं को जितनी जल्दी हो सके उनकी माताओं की गोद में रखने लगे हैं। (इसे आमतौर पर ''बन्धन'' कहा जाता है।) [13]पौलुस के जीवन से उदाहरण के द्वारा सिखाने का नियम पता चलता है (देखें फिलिप्पियों 4:9)। [14]ब्रूस नैरामोर, *हैल्प! आई एम ए पेरेंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1972), 60. [15]चार्ल्स स्विंडॉल, *यू एण्ड योर चाइल्ड* (न्यू यार्क: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1977), 87. [16]जेम्स डाब्सन, *द स्ट्रांग विल्ड चाइल्ड* (व्हीटन, इलिनोइस: टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1978), 56. [17]लोगान राइट, *पेरेंट पावर: ए गाइट टू रिसपॉन्सिबल चाइल्डरियरिंग* (न्यू यार्क: साइकॉलोजिकल डाइमैंशंस, 1978), 32. [18]यहां दिए गए सबक *गलत तरह के सबक* अर्थात बुरे उदाहरण हैं। आवश्यक हो तो आप इसे और सरल कर सकते हैं। [19]लेखक अज्ञात। कारल ब्रेकीन एण्ड पॉल फॉकनर, *वट एवरी फैमिली नीड्स ऑर वटएवर हैपन्ड टू मॉम, डैड एण्ड द किड्स?* (ऑस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1979), 147. [20]एक और नकारात्मक उदाहरण यारोबाम है। इस्राएल के राजाओं के इतिहास में हम इक्कीस बार पढ़ते हैं कि इस्राएल के राजा ''यारोबाम के पापों में चलते'' थे।

[21]यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन क रूप में होता है तो विवाह और घर के विषय पर बोलते समय मेरा पहला निमन्त्रण यही होता है। घर पर मैं जब भी बोलता हूं तो मैं यह ज़ोर देता हूं कि यह *मसीही* घर होना चाहिए, जिसका अर्थ है कि घर में हर व्यक्ति को विश्वासी मसीही होना चाहिए फिर मैं सबको बताता हूं कि मसीही कैसे बनना है या यदि भटक गए हैं तो वापस कैसे आना है और उनसे इसे मानने का आग्रह करता हूं। [22]देखें निर्गमन 12:7-13; 13:3-10. [23]देखें निर्गमन 13:11-13.